मरूस्थल

अध्याय प्रथम – अतिक्रमण

जल पर हिम पर वन उपवन पर, पर का ही अधिकार।
सिकता रेणु अश्म कण्टकतरू, मिला हमें बस क्षार।। 1

जलके हम मर रहे भर रहे, जल के कृत्रिम अब्धि
हम बल के आगार इन्हें पर, अमित सुफल उपलब्धि ।। 2

हम हरीतिमा के उत्सारक, पर ये खेत सशस्य।
नित परिवर्धनशील अमर्षण, का दायक यह दृश्य।। 3

पश्चिम से हम कभी बढ़े थे, बनकर झञ्झावात।
रूधिर सने लाखों नर मुंडों, की करते बरसात।। 4

भीषण भय को भर दो उर में, कंपित हो प्रतिपक्ष।
टांगो भालों पर शिशुओं को, काटो वनिता वक्ष।। 5

छल से पीछे जाकर रिपु के, करो अचानक वार।
काटो शीश भागते अरि के, निर्मित हो मीनार।। 6

हमने सीखी है पुरखों से, यही सफल रणनीति।
आग लगा दो गाँव–गाँव में, करो प्रसारित भीति।। 7

कुछ रण लड़ने पड़े हाथ में, आया सारा देश।
कायर भीरू विभाजित रिपु में, कहाँ शक्ति थी शेष।। 8

ईर्ष्या द्वेष कलह में उलझे, कुछ अभिमानी वीर।
यद्यपि लड़े किंतु तब तक थी, धरणी व्रणितशरीर।। 9

केवल दो युद्धों से स्थापित, किया सुविस्तृत राज।
छल से छीना व्यापारी ने, दो युद्धों में ताज।। 10

फिर से सिमट गये पश्चिम में, बाधित हुआ विकास
रिपु है उन्नतिशील बढ़ रहा, छूने ज्यों आकाश ।। 11

श्यामल [1] धरा पा गए लड़कर, भी ये शत्रु विरूद्ध।
हम सेवक भी बने हमारा, ही पथ किया निरूद्ध।। 12

सुरभित बाग नगर आलोकित, वितत [2] धान्य के क्षेत्र।
ऊँचे उठते भवन देखकर, जल उठते हैं नेत्र ।। 13

रहें जोड़ते कृषक वणिक सब, अतुलित धन सम्पत्ति।
भोग किन्तु पाते हैं इसको, कुछ बलशाली व्यक्ति।। 14

---

1 हरी भरी 2. विस्तृत फैले हुए

हमने सीखा मात्र युद्ध का, कौशल शासन भोग।
निज हित वेश्म[1] बनाते देखे, जग में किसने भोग [2]।। 15

रहे सदा से आयुध जीवी, श्रम दासों का कार्य।
विनिमय लाभार्जन होता बस, वणिकों को व्यवहार्य।। 16

जब तक आयुध निशित[3] हमारे, वेगवान थे अश्व।
तब तक पैरों पर गिरने को, विवश रहा यह विश्व।। 17

जिसके भाले तीक्ष्ण चमकती, तलवारों की धार।
उसका होता सकल विश्व पर, नैसर्गिक [4] अधिकार।। 18

कायर भीरू[5] अभी भी है यह, परम विभाजित देश।
इसे व्यर्थ ही रहा ज्ञान भ्रम, दिए शान्ति सन्देश।। 19

अपनी भूलों से न सीखना, रहा सदैव चरित्र।
सदा रौंदते आए इसको, लघुतर क्रूर अमित्र[6]।। 20

घिरा हुआ चहुँदिशि रिपुओं से, फिर भी आत्म विमूढ़।
बढ़ता जाता ज्यों निद्रा में, निर्भयता यह गूढ़[7]।। 21

यद्यपि आयुध बना लिए हैं, पर उनका उपयोग।
कर न सकेगा भीरू अनिश्चय, है असाध्यतम रोग।। 22

1. घर 2. सर्प 3. पैने तीक्ष्ण 4. प्राकृतिक 5. डरपोक
6. शत्रु 7. रहस्यमय

यद्यपि विफल हुए कुछ उद्यम, पर हम नहीं निराश।
कर देता लघु सिंह बृहत्तर, गजराजों का नाश।। 23

इसका रूधिर बहाओ क्रमशः, शिथिल पड़े करि [1] और।
तब सवार इस पर हो जाओ, बनो जगत सिरमौर ।। 24

नहीं प्राणघातक बन जाए, दो बस इतनी मार।
उपयोगी यह गज ढोएगा, विवश हमारा भार।। 25

आयी इसमें शक्ति वेदना, सहकर भी चिरकाल।
दो यंत्रणा[2] सुदीर्घ पड़ेगा, तभी शिथिल यह व्याल[3]।। 26

करो भेद उत्पन्न महावत, लड़ें परस्पर मूढ़।
निर्बल हो गज चले योजना, यह निर्बाध निगूढ़[4]।। 27

शीघ्र विजय की आतुरता में, असफल हुए प्रयास।
अतः क्रमिक आयोजन में अब दृढ़तर है विश्वास।। 28

महाकाय को शिथिल बनाते, कुछ कीटाणु अदृश्य।
इसी नीति से हो पाएगा, हमको रिपु यह वश्य[5]।। 29

सतत प्रवाहित पवन विघर्षित[6], कर देता पाषाण।
कौन जानता मरू से बढ़कर, एकाग्रताप्रमाण।। 30

1. हाथी 2. भयानक पीड़ा 3. हाथी 4. गुप्त छिपी हुई 5. वश में आने योग्य
6. घिस देना

खा जाते जब कीट जर्जरित[1], होता भवन विशाल।
होने अब जा रहा शत्रु का, भी ऐसा ही हाल।।28

किसने हिमनद की गति देखी, रहता पर गतिमान।
विष बीजों का वपन[2] अलक्षित[3], करता है मतिमान।।29

दुस्साहस से ही मिलते हैं, जय वैभव सम्मान।
अधिक विचारवान अक्रिय[4] नर, पाते चिर अपमान।।30

उत्तम आयुध दुर्दम योद्धा, अन्तर[5] करूणाहीन।
छल आधारित नीति करेगी, द्वेषण[6] को अति दीन।।31

सदा शत्रु की भू पर जाकर, ही करना संग्राम।
पीछे हटना पड़े जलाते जाओ अरि के ग्राम।।32

एक और आयुध अपनाओ, अविरत[7] असत[8] प्रचार।
जनहितचेष्टा भी शासन की, लगे स्वधर्मप्रहार।।33

कोटि–कोटि हों जहाँ अशिक्षित, वहाँ भ्रमों का जाल।
सुकर[9] आशुपरिणामी[10] फलता, दुर्निवार[11] चिरकाल।।34

शासन ही है सारे दुख का, दुरवस्था[12] का मूल।
भर दो मन में चलना है बस, अब इसके प्रतिकूल।।35

1. जीर्ण–शीर्ण 2. बोना 3. छिपकर 4. निष्क्रिय 5. ह्रदय 6. शत्रु 7. लगातार 8. असत्य, मिथ्या, झूठा 9. सरल, आसानी से करने योग्य 10. शीघ्र फल देने वाला 11. जिसका निवारण न किया जा सके 12. बुरी अवस्था

मूक समर्थक भी बन जाएँ, रिपुजन में कुछ लाख।
कर सकते हैं नगर खण्डहर, ग्राम जलाकर राख।।36

जब जनमत हो जाता क्रमशः, शासन के प्रतिकूल।
परम शक्तिशाली सत्ता की, भी हिल जाती चूल।।37

निष्ठा और भीति ही होते, शासन के आधार।
दोनों का ही ह्रास हमें है, करना भली प्रकार।।38

अर्पित करने प्राण मिल गए, हमको युवा अनेक।
जिनमें नहीं विवेक घृणा का, है केवल अतिरेक[1]।।39

हमने क्रमशः किया प्रणोदित[2] , अति अमार्ज्य[3] उन्माद।
अतः यन्त्रवत् स्वजनों तक को, मार रहे अविषाद[4]।।40

शत्रु शक्ति का ह्रास चल रहा, अनिर्बाध[5] अविराम[6]।
कुछ वर्षों में सौरभगर्वित, उजड़ेगा आराम[7]।।41

परबलदमन[8] सदा ही माना, हमने कार्य पुनीत।
सम्मुख आए बिना किया यह, कूटनीति की जीत।।42

हमें भूलवश मान रहे थे, निर्बल और असार।
भोग रहे वे मूढ़ वेदना, क्षति का अमित[9] प्रसार।।43

1. बहुतायत 2. उकसाना, प्रेरित करना 3. न मिटने योग्य 4. बिना खेद के 5. बिना बाधा, रूकावट के 6. लगातार बिना रूके 7. उद्यान बाग 8. शत्रु शक्ति का उच्छेद 9. जिसे मापा नहीं जा सकता

खोज न पाएंगे जनाब्धि में, विष के बीज सुगुप्त[1]।
जो हमने सायास[2] किए हैं, अरिजन[3] भीतर उप्त[4]।।44

कुछ–कुछ वे हो रहे प्रस्फुटित, कुछ हैं अभी प्रसुप्त।
जब होंगे सुप्ररूढ़[5] फलित वे, होगा अरिदल लुप्त।।45

करूणा संशय शमाधिक्य[6] से, चलते कभी न देश।
ऐसी संस्कृतियों के बचते, बस विस्तृत अवशेष।।46

भय भ्रम और भेद उपजाना, ही है सार्थक नीति।
इसका कुशल प्रयोग बढ़ाता, जय में पुष्ट प्रतीति[7]।।47

बहु वर्षो तक किया परिश्रम, हमने विविध प्रकार।
अब वह स्वप्न धर रहा क्रमशः, दृढ़ भौतिक आकार।।48

अब मरू था संतुष्ट, लग रही थी, जयश्री आसन्न[8]।
पूर्व ओर बढ़ चला शत्रु को, करने परम विपन्न[9]।।49

1. अच्छी तरह छिपे हुए 2. प्रयास पूर्वक 3. शत्रु 4. बोए गए 5. अच्छी तरह विकसित 6. शाम्त्वना की नीति की अधिकता 7. विश्वास 8. समीप ही स्थित 9. दुर्दशा करने

अध्याय द्वितीय – अमित्र[1] चरित्र

पश्चिम से बढ़ रहा मरूस्थल, निगल रहा उद्यान।
झुलस रही वनश्री सुकुमारी, तुम सोते अनजान।। 1

बढ़ते आते हैं समीर[2] से प्रेरित बहु बरखान[3]।
अर्धचन्द्र शर दशशिरमोचित[4], ज्यों अदभ्र[5] द्युतिमान।। 2

पीडित करतीं इसे निरंतर, अंशुमान[6] की अंशु[7]।
अतः किए क्या मरू नें निज हित, सृजित विपुल[8] शीतांशु[9]।। 3

वाष्पीकृत वापी होती है, होती मृदा[10] सक्षार[11]।
विगत सकल लावण्य लवणता, का अभेद्य विस्तार।। 4

प्रेरित होकर प्रबल पवन से, छूने को आकाश।
जब बढ़ता मरू केवल होता, जीवन का बहु ह्रास।। 5

1. शत्रु 2. वायु 3. मरूस्थल में अर्धचन्द्राकार रेत के टीले 4. रावण के धनुष से छोड़े गये 5. प्रचुर 6. सूर्य 7. किरण 8. बहुत, अनेक 9. चन्द्रमा 10. मिट्टी 11. क्षार युक्त